सामाजिक द्वंद्व एवं शांति शिक्षा

मंजू शर्मा*

शिक्षा मानव के भावों, विचारों, अभिव्यक्ति, अभिरुचि, अभिवृत्ति का परिष्करण करती है। आज शिक्षा द्वारा ज्ञान का परिष्करण तो हो रहा है, लेकिन मानसिक शांति नहीं होने के कारण मनुष्य दौड़ रहा है। लक्ष्य का निर्धारण किये बिना ही भाग रहा है। मनुष्य आज शांति की खोज में भटक रहा है। यह शांति शिक्षा द्वारा प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा में अध्यापक द्वारा बालकों में विषय ज्ञान के अलावा उन्हें अपने आप से परिचित करवाना होगा। बालकों में सत्य, विश्वास आदि मूल्य रोपित करने के लिए प्राचीन ग्रंथ, साहित्य द्वारा तार्किक चिंतन क्षमता का विकास करना होगा। यह आज समाज की आवश्यकता है। इसमें मुख्य भूमिका अध्यापक की हो सकती है जो शांति शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकेगी। शांति शिक्षा ही बालक में आत्मानुभूति एवं आत्माभिव्यक्ति कौशल को विकसित करेगी जिससे मनुष्य सामाजिक विसंगति से उभरने वाली समस्याओं को पहचान कर उनका समाधान कर सके।

जब जब समाज में अवांछनीय तत्व सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता के समक्ष एक चुनौती बनकर खड़े होते हैं, तब तब समाज की नियमन प्रणाली अपनी प्रभावोत्पादकता और फलप्रदता के अस्तित्व की रक्षा की गुहार लेकर शिक्षा के समक्ष आ खड़ी होती है और शिक्षा तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार अपना स्वरूप परिवर्तित कर नया स्वरूप धारण कर इस चुनौती का उत्तर देने के लिए सन्निद्ध हो जाती है।

आज मानव मन में अशांति का वातावरण बना हुआ है जिससे जाति, धर्म तथा उच्च जीवन स्तर की अभिलाषा के नाम पर हिंसात्मक संघर्ष हो रहे हैं। हिंसा बालकों के नैतिक मूल्यों के विकास में बाधा उत्पन्न करती है, जिससे समस्त विश्व में आपसी द्वंद्व चल रहा है। इस द्वंद्व को समाप्त करने में शांति शिक्षा की अहम भूमिका है। आज सारे संसार में राष्ट्र और धर्म के नाम पर जो संघर्ष व्याप्त है उस संघर्ष को कैसे समाप्त किया जाये? शिक्षा में आये भटकाव को कम करने के लिए किस प्रकार की योजनाओं को समावेशित किया जाये? इन सब प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का यह प्रयास है।

* *प्रवक्ता*, (शिक्षा), एम.ई.एस.डब्ल्यू. टी.टी. कॉलेज, जयपुर (राजस्थान)

संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करना हमारा लक्ष्य ही नहीं बल्कि प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए। शांति एवं सद्भाव स्थापित करने की इस प्रक्रिया में शांति शिक्षा एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम है। शांति शिक्षा का आधार समाज में अनसुलझे विवादों, हिंसा तथा विद्यार्थियों में आये भटकाव को रोकने से है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार ''शांति के लिए शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोण और कौशलों के पोषण पर बल देती है जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य बिठाने के लिए आवश्यक हैं।''

विभिन्न भारतीय विद्वानों का मत भी शिक्षा द्वारा आत्मिक शांति ही माना गया है। महर्षि अरविन्द आध्यात्मिक विकास को ही बालक की शक्ति मानते थे। जब मानव अध्यात्म से जुड़ जाता है तो परम् शांति का अनुभव स्वत: ही हो जाता है।

मार्टिन लूथर किंग ने कहा, "Peace is not the absence of war but the presence of justice."

शांति शिक्षा के लिए अध्यापक को विद्यार्थियों में निम्न गुणों को रोपित किया जाना चाहिए-

- स्पष्ट जीवन दर्शन
- तार्किक चिंतन
- स्वयं में शांति की खोज
- सकारात्मक सोच
- मानवता के लिए शिक्षा
- समाज में शांति की स्थापना
- हिंसा में शांति की स्थापना
- स्वयं में सत्यता की स्थापना
- संपूर्ण सृष्टि की सुरक्षा
- विश्व बंधुत्व
- साहित्य का अध्ययन

गीता दर्शन

भारत का प्रमुख ग्रंथ 'गीता' ने संपूर्ण विश्व व प्रत्येक व्यक्ति में शांति स्थापना की बात की है। यह हमारी मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं का बुद्धिमतापूर्ण हल खोजने में मदद करता है।

गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि स्वयं से परे हट कर संपूर्ण मानवता के लिए लड़ो जिससे अन्याय समाप्त होकर न्याय का साम्राज्य स्थापित हो। यदि अपने शत्रु को समाप्त करना चाहते हो तो नफ़रत करना छोड़ दो। सभी को समान निगाहों से देखो, विश्व में अशांति अपने आप समाप्त हो जाएगी। जैसा व्यवहार अपने लिए चाहते हो वैसा व्यवहार दूसरों के साथ करो। दूसरों की पीड़ाओं को महसूस करो। गीता एवं तत्व दर्शन में तार्किक चिंतन को ही समस्या का समाधान माना गया है। तार्किक चिंतन द्वारा ही समस्या को समझा जा सकता है तथा उसी के द्वारा ही वास्तविक सत्य की खोज की जा सकती है। अपने ज्ञान का आदान-प्रदान एवं दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहना ही तार्किक चिंतन का आधार स्तंभ है। तार्किक चिंतन द्वारा स्वयं की समस्याओं एवं सामाजिक विसंगति से उभरने वाली समस्याओं को समझकर उनका निराकरण किया जा सकता है।

जैन दर्शन

जैन दर्शन में भी वास्तविक ज्ञान आत्मिक शांति को माना है जो शिक्षा द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। जैन दर्शन की दृष्टि से जीवन में सच्चा सुख, शांति पाने के लिए सच्ची

श्रद्धा, सच्चा ज्ञान, सही आचरण, जीवन के प्रति निर्मल दृष्टि तथा हमें प्रति क्षण सजग रहना होगा कि हमारा अविवेक, हमारी मिथ्या आकांक्षाएँ या हमारा अहंकार हमें मलिन तो नहीं बना रहा, आत्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए हमें स्वयं में शांति की खोज करनी होगी। जैन दर्शन के प्रमुख तत्व ज्ञान, आत्मिक ज्ञान, तप, त्याग, द्रव्य, गुण, पर्याय, सातों तत्वों में आत्मा प्रमुख है। त्रिरत्न- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। पंच महाव्रत- सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अकिंचन, ब्रह्मचर्य। षट द्रव्य- अजीवद्रव्य, पुवगल, धर्म-अर्धम, द्रव्य, आकाश द्रव्य, काल द्रव्य। दशलक्षण- पर्व, उत्तम, खमा, मार्दव, आर्जव सत्य, शौच, संयम तप अकिंचन, ब्रह्मचर्य, स्यादवाद व अनेकांतवाद। उसने सभी एकांतिक मतों को अनेकांत के रूप में प्रतिष्ठित किया है। वस्तु या तत्व के स्वरूप को समझने के लिए जैन धर्म के सिद्धांत प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। वैश्विक समस्याओं को सुलझाने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। इस हेतु व्यक्ति को आत्मज्ञान से ही सच्ची शांति मिल सकती है। श्रद्धापूर्वक चिंतन-मनन करने से आत्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है, और आत्म ज्ञान की प्राप्ति से ही सच्ची शांति की प्राप्ति होती है।

जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन पर विशेष ज़ोर दिया गया है। सम्यक् दर्शन अर्थात् यथार्थ दृष्टि (विवेक दृष्टि)। वास्तव में विवेक दृष्टि ही व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है, यही ज्ञान प्राप्ति की कसौटी है और इसकी सार्थकता मानव की ज्ञान दृष्टि ही मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। मानव में विवेक उसकी समीचीन दृष्टि का होना है। समीचीन दृष्टि से तात्पर्य है हित-अहित, सत्य-असत्य, करणीय व अकरणीय, हानि-लाभ व सुख-दुख आदि के सम्यक् स्वरूप को पहचानना व निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना। मानव का विवेक जब जाग्रत हो जाता है तो संपूर्ण सृष्टि में शांति की स्थापना स्वत: ही हो जाती है।

परिवेश में आया परिवर्तन समाज और सामाजिक मानसिकता को नयी दिशा और नया रंग प्रदान करता है। जो चल रहा होता है वही परिवेश की माँग के अनुरूप नया स्वरूप प्राप्त करने लगता है। जीवन और साहित्य दोनों ही इस नियम की चोट को सहते हैं। अत: सोच बदलती है तो साहित्य भी बदलने लगता है। लेकिन प्राचीन साहित्य का अध्ययन मनुष्य के भावों एवं विचारों के परिष्करण, विकसन और उन्नयन का महत्वपूर्ण माध्यम है। युग विशेष की सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ उसके संघर्षों, परिवर्तनों तथा महत्वपूर्ण मोड़ों की छाया साहित्य के आईने में यथावत् देखी जा सकती है, इसी कारण साहित्य को मानवीय सत्ता के अध्ययन की संज्ञा दी जाती है।

साहित्य द्वारा हम मानव में चिंतन, मनन, जागृति उत्पन्न कर सामाजिक परिवेश में आये बदलाव को बदल सकते हैं, लोगों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप प्रदान कर समस्त मानव जगत में शांति स्थापित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

आज मानव में अशांति के कारण ही सामाजिक द्वंद्व उत्पन्न हो रहा है, जो समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, जगत को प्रभावित कर रहा है। इसके लिए मानव को साहित्य अध्ययन

कर तार्किक चिंतन के विकास द्वारा ही शांति की स्थापना करनी चाहिए। अतः शांति शिक्षा की शिक्षा प्रारंभ से ही आवश्यक होनी चाहिए। शिक्षा मानवीय एवं सामाजिक जीवन में जो कार्य करती है, राष्ट्र उससे प्रभावित होता है। नागरिक राष्ट्र की इकाई हैं, उसके चरित्र से राष्ट्र का चरित्र प्रभावित होता है। उसकी योग्यता एवं क्षमता पर राष्ट्र का विकास आधारित है। शिक्षा द्वारा ही राष्ट्रीय लक्ष्यों से अवगत होकर उसकी प्राप्ति के लिए प्रेरित होते हैं, शांति शिक्षा के माध्यम से धार्मिक सहिष्णुता की भावना एवं आध्यात्मिक चेतना के विकास का प्रभाव राष्ट्र एवं समाज पर पड़ता है। शांति शिक्षा समाज व राष्ट्र की आकांक्षाओं की पूर्ति करने में सहायता करती है तथा नागरिकों को सामाजिक नियंत्रण एवं सामाजिक परिवर्तन के योग्य बनाती है।

संदर्भ

एम.एच.आर.डी. 1986/1992. *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन* नयी दिल्ली

कोवी, एस.आर. 2009. *हैबिट फ्रॉम इफैक्टिवनैस टू ग्रेटनैस* (इन हिंदी) मंजू पब्लिकेशन हाउस, भोपाल

देवल, ओ.एस. 2011. *स्परीचुअलिज़्म- ए गाइड टू प्रमोट सोशल कोहेशन एंड यूनिवर्सल पीस* (ड्रफ्ट) एट इंटरनेशनल कॉन्फ्रैन्स ऑन प्रैज़ेन्टिड प्रमोटिंग सोशल कोहेशन थ्रू पीस एजुकेशन प्लैनिंग इन उदयपुर ऑन 26-27 मार्च 2011

दोसी, प्रवीण. 2011. *शांति शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एकता, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, शांति शिक्षा द्वारा सामाजिक समरसता,* उदयपुर 26-27 मार्च 2011

ब्रेमेल्ड थियोडोर. 1975. *शिक्षा की दार्शनिक प्रणालियाँ, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में.* राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

बाला सूर्या, ए.एस. 2001. *लर्निंग द वे ऑफ़ पीस- ए टीचर गाइड टू एजुकेशन फ़ॉर पीस,* यूनेस्को

राधाकृष्णन, एस. 1990. *उपनिषदों का संदेश* राजपाल एंड संस, दिल्ली

सलामातुल्लाह क़ादरी, एं डब्ल्यू. बी. 1999. *ज़ाकिर हुसैन ऑन एजुकेशन,* एन.सी.टी.ई, नयी दिल्ली